रुद्राष्टाध्यायी

नारायणं पराभवं वसिष्ठं
शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं
गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्म-
पादं च हस्तामलकं च शिष्यम्
तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यान्
अस्मद् गुरून्सन्ततमानतोऽस्मि।
श्रुति-स्मृति-पुराणानाम्
आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं
शङ्करं लोकशङ्करम्॥
शङ्करं शङ्कराचार्यं
केशवं बादरायणम्।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे
भगवन्तौ पुनःपुनः॥
यद् द्वारे निखिला निलिम्पपरिषद्
सिद्धिं विधत्तेऽनिशम्।
श्रीमच्छीलसितं जगद्गुरुपदं
नत्वात्मतृप्तिङ्गताः॥
लोकाज्ञानपयोदपाटनधुरं
श्रीशङ्करं शर्मदं।
ब्रह्मानन्दसरस्वतीं गुरुवरम्
ध्यायामि ज्योतिर्मयम्॥

रुद्राभिषेक-महत्त्व

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः।
शंकरायच मयस्करायच नमः शिवायच शिवतराय च॥

वैदिक परम्परानुसार रुद्राभिषेक का मानव दिनचर्या में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। मानव शरीर रचना वैदिक गठन के अनुरूप है, ऐसा महर्षि प्रणीत अनुसंधानों से प्रमाणित हो चुका है। रुद्राभिषेक से आत्मा शुद्ध एवं सतोगुणी होती है, संकल्प शक्ति बढ़ती है और इससे ज्ञानशक्ति, विचारशक्ति, बुद्धि, श्रद्धा, मेधा, भक्ति तथा पवित्रता में वृद्धि होती है। व्यापार-व्यवसाय, कला-कौशल, शास्त्रानुसंधान और व्यवहार-कुशलता का सफल

सम्पादन उत्साहपूर्वक होता है। इससे सुखमय दीर्घ जीवन के आरोग्य साधनों का स्वतः संचय होता है।

रुद्राभिषेक से प्रत्येक मानव अपनी चेतना को पूर्ण जागृत करके सर्वसमर्थता प्राप्ति के आध्यात्मिक एवं दैवीय मार्ग में अग्रसर होते हुए अपनी साधना परायण दिनचर्या द्वारा विश्व की सामूहिक चेतना में सत्व गुण बढ़ाकर "**भूतल पर स्वर्ग**" का अनुभव कर सकता है।

"**वेदः शिवो शिवो वेदः**" के अनुसार वेद शिव है और शिव वेद है अतः शिव वेदात्मक अथवा वेद स्वरूप है इसीलिए वेद मन्त्रों के द्वारा भगवान् आशुतोष शिव का पूजन, अभिषेक किया जाता है। जैसे-ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है वैसे ही उनकी रौद्र

शक्ति अग्नि, जल, औषधि, वनस्पति आदि पदार्थों में अभिव्याप्त है। समस्त ब्रह्माण्ड को वह अपनी शक्ति से सामर्थ्यवान् बनाते हैं इसलिए उनका नाम रुद्र है। श्वेताश्वरोपनिषद् कहता है कि "**एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः**" (३/२)।

ब्रह्माण्ड में उसी एक परमेश्वर की शक्ति निहित है, उसके अतिरिक्त किसी दूसरे की सत्ता नहीं है। शिव पुराण विद्येश्वर संहिता में "**अहमेव परं ब्रह्म मत्स्वरूपं कला-कलम्**" जैसी शक्तियां निहित हैं। शैवद्वैतवादी "**सर्वं ब्रह्मेति उपासीत सर्वं वै रुद्र इत्यपि**" कहते हैं।

रुद्र प्रत्यक्ष ब्रह्म है। शास्त्रकार भी प्रत्यक्ष ब्रह्म मानते हैं। जब श्रुति "**अजायमानो बहुधा विजायते**" (यजु० ३१/१९)

कहकर यह संकेत करती है कि वह न पैदा होता हुआ भी अनंत रूप में विद्यमान है तब उसका आशय प्रत्यक्ष ब्रह्म कथन से ही है। यजुर्वेद का प्रत्यक्ष ब्रह्म वायु है, अतः उसका प्रथम प्रार्थना मन्त्र है "**इषेत्वा उर्जेत्वा वायवस्थ**" (यजु० १/१)।

ऋग्वेदी का प्रत्यक्ष ब्रह्म अग्नि है अतः उसका मंत्र है "**अग्निमीडे पुरोहितम्**"। तैत्तिरीय आरण्यक का "**नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि**" मन्त्र भी प्रत्यक्ष ब्रह्म का समर्थन करता है। यजुर्वेद जब "**नमस्ते रुद्र मन्यव**" के रूप में प्रार्थना करता है तब इसी रुद्र ब्रह्म की उपासना करता है इसीलिए रुद्राभिषेक के पंचम अध्याय से हमें यही शिक्षा प्राप्त होती है कि संसार की समस्त वस्तु जड़-चेतन को नमस्कार करें।

रुद्राभिषेक करने के अनेक विधान दिये गये हैं रुद्राभिषेक, लघुरुद्र, महारुद्र एवं अतिरुद्र क्रमशः उत्तरोत्तर श्रेष्ठ कहे गये हैं।

अभिषेकात्मक श्रेष्ठ पदार्थ

जल से वर्षा, कुशा के जल से शान्ति, दही से पशु प्राप्ति, ईख (गन्ना) के रस से लक्ष्मी प्राप्ति, मधु और घी से धन, तीर्थजल से मोक्ष, दुग्ध से पुत्र प्राप्ति अथवा वन्ध्या, काकवन्ध्या या मृतवत्सा को गो दुग्ध से शीघ्र संतान प्राप्ति, जल की धारा से ज्वर-शान्ति, घृत धारा से वंश-विस्तार, केवल दुग्ध की धारा से प्रमेह रोग की शान्ति और मनोवांछित फलों की पूर्ति, शर्करा मिले हुये दुग्ध से जड़-बुद्धि का निर्मल होना, सरसों के तेल से शत्रु की

बुद्धि में मैत्री भाव जागृत करने तथा रोगों का नाश और शहद से यक्ष्मा रोग की शान्ति तथा पापक्षय होता है। आरोग्य की इच्छा वाले को घृत से, दीर्घायु की इच्छा वाले को दुग्ध से और पुत्रार्थी को चीनी मिश्रित जल से भगवान् शंकर का अभिषेक करना चाहिए।

रुद्राभिषेक से लाभ

* रुद्राभिषेक से सद्बुद्धि, सद्विचार, सद्धर्म और सत्कर्म की ओर प्रवृत्ति होती है।
* रुद्राभिषेक से मानव की आत्मशक्ति, ज्ञानशक्ति और मंत्रशक्ति जागृत होती है।
* रुद्राभिषेक से मानव का जीवन मंगलमय बन जाता है।

* रुद्राभिषेक से मानव में दैवी शक्ति अथवा दैवीय गुणों का प्रादुर्भाव होता है।
* रुद्राभिषेक से अन्तःकरण की अपवित्रता, मलविक्षेप और कुसंस्कारों का निवारण होता है।
* रुद्राभिषेक में वैदिक मंत्रों के श्रवण करने से मानव देवता बनकर जगत् के कल्याण करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।
* रुद्राभिषेक से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चतुष्टय पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है।
* रुद्राभिषेक से आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक-इन तापत्रय की निवृत्ति होती है।

रुद्राभिषेक से संक्रामक रोगों का नाश, शारीरिक सम
दोषों का नाश, सर्वविध अमंगलों का नाश, पैशाचि
कष्टों से निवृत्ति और सभी प्रकार की विघ्न बाधाएं दूर हो
जाती हैं।

* रुद्राभिषेक से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। असाध्य कार्य भी साध्य हो जाते हैं और सर्वदा सर्वत्र विजय होती है।
* रुद्राभिषेक से मानव आरोग्य, विद्या, कीर्ति, पराक्रम, धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि और अनेक प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त कर लेता है।
* रुद्राभिषेक से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, संसार का कल्याण होता है और अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, अकाल मृत्यु, महामारी, प्रभृति रोग-शोकादि का शमन हो जाता है।

परम पूज्य **महर्षि महेश योगी जी** के दैवीय निर्देशन एवं आशीर्वाद से वैदिक संस्कृति के उत्थान, दुःखरहित विश्व की संरचना एवं विश्व शांति के उद्देश्य से रुद्राभिषेक, यज्ञ एवं विविध प्रकार के अनुष्ठानों पर अनुसंधान हो रहे हैं और इनके प्रभाव से प्रत्येक व्यक्ति का जीवन समस्याविहीन, दुःखविहीन होगा और ऋद्धि-सिद्धि सम्पन्न एवं आनंद-ज्ञान शक्ति से परिपूर्ण होगा और इससे प्रत्येक के जीवन में पूर्णता का अनुभव होगा।।

शिवपूजनविधिः

यथोक्तस्नानानन्तरं श्वेतं धौतं वस्त्रं परिधाय उपवस्त्रं गृहीत्वा कुशादिविहितासने प्राङ्मुख उपविश्य दक्षिणहस्ते कुशद्वयं धारयेत्:-

पवित्रीकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

त्रिराचमनम्

अन्तर्जानुहस्तः संहताङ्गुलिना शुद्धजलं गृहीत्वा मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठेन वामेनान्वारब्धपाणिना ब्रह्मतीर्थेन पिबेत् -

ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः। ११
ॐ माधवाय नमः । ॐ गोविन्दाय नमः।
हस्तौ प्रक्षाल्य॥

आसनशुद्धिः

पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः
ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

पवित्रीधारणम्

ॐ प॒वित्रे॑स्थो॒ व्वै॒ष्ण॒व्यौ॒ सवि॒तुर्वः॑ ÷ प्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्यच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॑ ÷ तस्य॑ ते पवित्रपते प॒वित्र॑पूतस्य॒ यत्का॑मः पुने॒तच्छ॑केयम्।

शिखाबन्धनम्

मानस्तोक इति मन्त्रस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः
एको रुद्रो देवता शिखाबन्धने विनियोगः ।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ।
मानोव्वीरान्नुद्रभामिनोव्वधी र्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे ॥

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥

स्वस्ति वाचनम्

हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा शान्तिपाठं पठेयुः

हरिः ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासो ऽअपरीतासऽउद्भिदः ॥ देवानो यथा सदमिद्रवृधेऽअसन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ १ ॥ देवानाम्भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाँ रातिरभिनो निवर्त्तताम् ॥ देवानाँ सख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥ तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्द क्षमस्त्रिधम् ॥ अर्य्यमणं व्वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥ तन्नो व्वातो मयो भुव्वातु भेष जन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ॥ तद्ग्रावाणः सोमसुतो

मयोभुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥ ४ ॥ तमी- १४
शानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेवयम् ॥
पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये
॥ ५ ॥ स्वस्तिन ऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा
व्विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो
बृहस्पतिर्द्दधातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः
शुभंय्यावानोव्विदथेषुजग्मयः ॥ अग्निजिह्वामनवः
सूरचक्षसोव्विश्वेनोदेवा ऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥
भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितं यदायुः

॥ ८ ॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजर १५
सन्तनूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारी
रिषतायुर्ग्गन्तोः ॥ ९ ॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्ष
मदितिर्म्मातासपितासपुत्रः ॥ व्विश्वेदेवाऽअदितिः
पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ॥ १० ॥ द्यौः
शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः ॥ व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा
शान्तिरेधि ॥ यतोयतः समीहसेततो नोऽ अभयङ्कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥

संकल्पः

ॐ स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थिति-लयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणत-पारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेककोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त-महदहंकार-पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि-वाराह-दंष्ट्राग्र-विराजिते कूर्मानन्त-वासुकि-तक्षक-कुलिक कर्कोटक-

पद्म-महापद्म-शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुदाञ्जन-पुष्पदन्त- सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल- वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकानामुपरिभागे पुण्यकृ-न्निवासभूत भूर्लोक- भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक-जनोलोक-तपोलोक सत्य-लोकाख्य सप्तलोकानामधोभागे चक्रवालशैल- महावलयनाग मध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि-राजशेषस्य सहस्त्रफणा मणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डिते अमरावत्य शोकवती भोगवती-सिद्धवती-गान्धर्ववती -काञ्ची -

अवन्त्यलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोका
चलवलयिते लवणेक्षु-सुरा सर्पि-र्दधि-क्षीरोदकार्णवपरिवृते
जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च-शाक शाल्मलिपुष्कराख्य
सप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व
चारणभारतेतिनव- खण्डमण्डिते सुवर्णगिरि कर्णिकोपेत
महासरोरुहा- कारपञ्चाशत् कोटियोजनविस्तीर्ण भूमण्डले
अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिकापुरी
द्वारावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-
रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत
प्रतिष्ठिते हरिवर्षकिं पुरुषभारतवर्षयोश्च दक्षिणे

नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल
विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-
सूक्तावन्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल-
लङ्केति- नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी-
क्षिप्रा-यमुना-सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा -कावेरी-
पयोष्णी -कृष्णा-वेण्या-भीमरथी-तुंगभद्रा ताम्रपर्णी-
विशालाक्षी-चर्मण्वती-वेत्रवती-कौशिकी-गण्डकी-
विश्वामित्री सरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेकपुण्य
नदीविराजिते दण्डक-विन्ध्यक-चम्पक-बदरिक-
महीलांगुहेक्षुक नैमिष-कदलिक देवदार्वाख्यदशारण्ययुते

भारतवर्षे सकल देवतानां निवासभूमौ, वेदभूमौ श्रीभगवतो महापुरुषस्य नाभिसरोरुहादुत्पन्नस्य तदाज्ञया प्रवर्तमाने सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणः प्रथमे परार्धे पंचाशदब्दात्मिके व्यतीते द्वितीये परार्धे रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे प्रथमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमे दिवसे अह्नि द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते स्वायम्भुव स्वारोचिषोत्तम तामस रैवत चाक्षुषाख्येषु षट्सु मनुषु व्यतीतेषु सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे महर्षि

ज्ञानयुगीयवैदिकविश्वप्रशासनस्य राजधान्यां पूर्णभूमौ, भारतवर्षस्य ब्रह्मस्थाने, महर्षि वेद विज्ञान विश्व विद्यापीठपरिसरे चान्द्र सौरसावन नाक्षत्र बार्हस्पत्यमानेषु व्यवह्रियमाणेषु तत्र चान्द्र सौरसावनमानानां प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये..... सम्वत्सरे .....उत्तरसहस्रद्वयपरिमिते वैक्रमाब्दे .....उत्तर एकोनविंशतिशततमे शालिवाहनशकाब्दे ..... उत्तर एकपञ्चाशच्छततमेयुधिष्ठिर संवत्सरे उत्तर पञ्चविंशति शततमेआद्यशङ्कराचार्य संवत्सरे महर्षिज्ञानयुगीय .....

सम्वत्सरे ..... अयने ..... ऋतौ .....मासे

.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे..... नक्षत्रे

.....योगे..... करणे ..... राशिस्थितेश्रीचन्द्रे

..... राशिस्थितेश्रीसूर्ये .....राशिस्थितेश्रीभौमे

.....राशिस्थितेश्रीबुधे..... राशिस्थितेश्रीदेवगुरौ

.....राशिस्थितेश्रीशुक्रे .....राशिस्थितेश्रीशनौ

.....राशिस्थितेश्रीराहौ .....राशिस्थितेश्रीकेतौ एवं

ग्रहगणगुणविशेषण विशिष्टयां पुण्यायां पुण्यकालेमहापुण्य शुभतिथौ

गणेशाम्बिकयोः पूजनम्

अष्टदलोपरि गणेशंगौरीं च संस्थाप्य

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्श्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ध्यानम् समर्पयामि।

हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आवाहयेत्-

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् ॥

गौर्यावाहनम्- ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्याम् नमः

इति मन्त्राभ्यां गौरीगणेशयोरावाहनं पूजनं च कुर्यात्।

श्रीसाम्बसदाशिवपरिवारस्य ध्यानं कुर्यात्-

नन्दीश्वरम् पूजनम्-हरिः ॐ आशुः शिशानो व्वृषभोनभीमोघं नाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रन्दनोनिमिष ऽएकवीरः शतसेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः।

वीरभद्रपूजनम् - ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः॥

स्वामिकार्तिकपूजनम्— ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनश्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन्॥

कुबेरपूजनम्— ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्वं व्वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम ऽउक्तिं यजन्ति॥

ॐ नमोंऽस्तु स॒र्पेभ्यो॒ ये के च॑ पृथि॒वीमनु॑।
ये ऽअ॒न्तरि॑क्षे॒ ये दि॒वि तेभ्यः॑ स॒र्पेभ्यो॒ नमः॑÷ ॥

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः साम्बशिवं ध्यायामि।

आवाहनम्-हरिः÷ॐ नमस्तेरुद्रम॒न्यव॑ऽउ॒तोत॒ऽइषवे॒ नमः॑÷ ॥ बा॒हुब्भ्या॑मु॒तते॒नमः॑÷

त्रिपुरान्तकरं देवं चूडाचन्द्रमहाद्युतिम्।
गजचर्मपरीधानं शिवमावाहयाम्यहम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्- ॐ या॒तेरु॑द्रशि॒वात॒नूरघो॒राऽपा॑पकाशिनी।
तया॑नस्त॒न्वा॒शन्त॑मया॒गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि ॥

विश्वेश्वर महादेव महेशान परात्पर।
मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

प्राणप्रतिष्ठापनम्-ॐ मनोंजूतिर्ज्जुषतामाज्यंस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंयज्ञ्ञ्ठ० समिमन्दधातु। व्विश्वें देवासं ऽइहमांदयन्तामोंइँ प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः प्राणप्रतिष्ठापयामि।

पाद्यम्-ॐ यामिषुंङ्गिरिश न्तहस्तेंबिभर्ष्यं स्तवे। शिवाङ्गिंरित्रताङ्कुस्माहिंꣳसीः पुरुषञ्जगंत्॥

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्-ॐ शिवेनव्वचंसात्त्वागिरि शाच्छां व्वदामसि। यथांनः सर्व्वमिज्जगं दयक्ष्मꣳसुमनाऽअसंत्॥

नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्-ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमो दैव्योभिषक् ॥ अहीँश्च सर्व्वाञ्जभयन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव ॥

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्-ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽअरुणऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः ॥ ये चैनꣳ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा हेडऽईमहे ॥

गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्-ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावकं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्-ॐ दधिक्राब्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रण ऽआयूꣳषि तारिषत् ॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानं-ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्-ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ऽ अस्तु सूर्य्यः। माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः॥

दिव्यैः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम्।
मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्-ॐ अपा ँ रसमुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्-ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्-ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः॥

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।
सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

महाभिषेकस्नानम्- ॐ नमस्ते० (१-१६) रुद्रसूक्त मंत्रों से जलधारा द्वारा अभिषेक करें-

गन्धोदकस्नानम्- ॐ त्वांगन्धर्व्वा ऽअखनँ स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम् ।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

उद्वर्तनस्नानम्- ॐ अर्ठ० शुना ते अर्ठ० शु पृच्च्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते सोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः ॥

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ।
उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि ।

विजयास्नानम्- ॐ व्विज्ज्य न्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ ॥ऽउत ॥ अनेशन्नस्य या ऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥

शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभावसमन्वितम् ।
विजयाख्यं च स्नानार्थं भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः विजयां समर्पयामि ।

वस्त्रोपवस्त्रम्- ॐअसौ योऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवो व्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृड यातिनः ॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्-ॐ नमोंऽस्तु नीलग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे॥ अथो येऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेभ्योंऽकरन्नमः॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्— ***ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमा सदत्स्वः। वासोऽअग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो॥***

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्ध (चन्दन)— ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्॥ याश्च ते हस्तऽइषवः पराता भगवोवप॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धं समर्पयामि।

भस्म—ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। सꣳ सृज्यमातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः॥

सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिस्समप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः भस्मं समर्पयामि।

अक्षतः—ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि—ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम् ।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
काशीवासनिवासी च कालभैरवदर्शनम् ।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम् ।
अघोरपापसंकाशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशङ्करम् ।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर ।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रियः ॥

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः ।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ॥
श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शङ्करस्य सदा प्रियम् ।
पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वरम् ॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च कोमलैश्चातिसुन्दरैः ।
त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
अमृतोद्भवश्रीवृक्षं शङ्करस्य सदा प्रियम् ।
तत्ते शम्भो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश बिल्वपत्राणि समर्पयामि ।

दूर्वाङ्कुराः—ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

शमीपत्रम्—ॐ अग्नेस्तनूरसि व्वाचो व्विसर्ज्जनं देववीतये त्त्वा गृह्णामि बृहद्ग्रावासि व्वानस्पत्यः स ऽइदं देवेब्भ्यो हविः शमीष्व सुशमि शमीष्व। हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि॥

अमङ्गलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शमीपत्राणि समर्पयामि।

तुलसी-मञ्जरी—ॐ शिवो भव प्रजाब्भ्यो मानुषीब्भ्यस्त्वमङ्गिरः। मा द्यावापृथिवी ऽअभिशोची र्म्मान्तरिक्षं मा व्वनस्पतीन्॥

मिलत्परिमलामोदभृङ्गसङ्गीतसंस्तुताम्।
तुलसीमञ्जरीं मञ्जु अञ्जसा स्वीकुरु प्रभो॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः तुलसीमंजरीं समर्पयामि।

आभूषणम्—ॐ युवं तमिन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्॥

वज्र-माणिक्य-वैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आभूषणं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि—ॐ अहिंरिव भोगैः पर्य्येति बाहुँ ज्यायाहे तिम्परि बाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान् पुमान् पुमाᳬ संपरिपातु व्विश्वतः॥

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूर—ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यसुखवर्द्धनम्।
शुभदं चैव माङ्गल्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम्—ॐ त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शङ्कर॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

अङ्गपूजा-

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि ॥ १ ॥
ॐ शङ्कराय नमः जङ्घे पूजयामि ॥ २ ॥

ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ॥ ३ ॥
ॐ शम्भवे नमः कटीं पूजयामि ॥ ४ ॥
ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ॥ ५ ॥
ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ६ ॥
ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि ॥ ७ ॥
ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि ॥ ८ ॥
ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि ॥ ९ ॥
ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि ॥ १० ॥
ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि ॥ ११ ॥
ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि ॥ १२ ॥
ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि ॥ १३ ॥
ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ १४ ॥

आवरणपूजा—

ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥

ॐ शिवाय नमः ॥३॥ ॐ विरूपाय नमः ॥४॥

ॐ विश्वरूपाय नमः ॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥६॥

ॐ भैरवाय नमः ॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥८॥

ॐ शूलपाणये नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय नमः ॥१०॥

ॐ महेशाय नमः ॥११॥

एकादशशक्तिपूजा—

ॐ उमायै नमः ॥१॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः ॥२॥

ॐपार्वत्यै नमः ॥३॥ ॐ गौर्यै नमः ॥४॥

ॐ काल्यै नमः ॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः ॥६॥

ॐ कोटर्यै नमः ॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः ॥८॥

ॐ ह्रां नमः ॥९॥ ॐ ह्रीं नमः ॥१०॥

ॐ गङ्गादेव्यै नमः ॥११॥

गणपूजा—

ॐ गणपतये नमः ॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः ॥२॥

ॐपुष्पदन्ताय नमः ॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥४॥

ॐ भैरवाय नमः ॥५॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥६॥

ॐ ईश्वराय नमः ॥७॥ ॐ दण्डपाणये नमः ॥८॥

ॐ नन्दिने नमः ॥९॥ ॐ महाकालाय नमः ॥१०॥

अष्टमूर्तिपूजा—

ॐ भवाय क्षितिमूर्तये नमः ॥१॥
ॐ शर्वाय जलमूर्तये नमः ॥२॥
ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ॥३॥
ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॥४॥
ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॥५॥
ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ॥६॥
ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॥७॥
ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥८॥

एकादश रुद्रपूजा—

ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥
ॐ शर्वाय नमः ॥३॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥४॥

ॐ विश्वरूपिणे नमः ॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥६॥
ॐ कपर्दिने नमः ॥७॥ ॐ भैरवाय नमः ॥८॥
ॐ शूलपाणये नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय नमः ॥१०॥
ॐ महेश्वराय नमः ॥११॥

अष्टोत्तरशतशिवनाम पूजा -

ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः।

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ शिवाय नमः ॥१॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥२॥
ॐ शम्भवे नमः ॥३॥ ॐ पिनाकिने नमः ॥४॥
ॐ शशिशेखराय नमः ॥५॥ ॐ वामदेवाय नमः ॥६॥
ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥८॥
ॐ नीललोहिताय नमः ॥९॥ ॐ शङ्कराय नमः ॥१०॥
ॐ शूलपाणये नमः ॥११॥ ॐ खट्वाङ्गिने नमः ॥१२॥
ॐ विष्णुवल्लभाय नमः ॥१३॥ ॐ शिपिविष्टाय नमः ॥१४॥
ॐ अम्बिकानाथाय नमः ॥१५॥ ॐ श्रीकण्ठाय नमः ॥१६॥
ॐ भक्तवत्सलाय नमः ॥१७॥ ॐ भवाय नमः ॥१८॥
ॐ शर्वाय नमः ॥१९॥ ॐ त्रिलोकीशाय नमः ॥२०॥
ॐ शितिकण्ठाय नमः ॥२१॥ ॐ शिवाप्रियाय नमः ॥२२॥
ॐ उग्राय नमः ॥२३॥ ॐ कपालिने नमः ॥२४॥

ॐ कामारये नमः ॥२५॥ ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः ॥२६॥
ॐ गङ्गाधराय नमः ॥२७॥ ॐ ललाटाक्षाय नमः ॥२८॥
ॐ कालकालाय नमः ॥२९॥ ॐ कृपानिधये नमः ॥३०॥
ॐ भीमाय नमः ॥३१॥ ॐ परशुहस्ताय नमः ॥३२॥
ॐ मृगपाणये नमः ॥३३॥ ॐ जटाधराय नमः ॥३४॥
ॐ कैलासवासिने नमः ॥३५॥ ॐ कवचिने नमः ॥३६॥
ॐ कठोराय नमः ॥३७॥ ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ॥३८॥
ॐ वृषाङ्काय नमः ॥३९॥ ॐ वृषभारूढाय नमः ॥४०॥
ॐभस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः ॥४१॥ ॐ सामप्रियाय नमः ॥४२॥
ॐ स्वरमयाय नमः ॥४३॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः ॥४४॥
ॐ अश्विनीश्वराय नमः ॥४५॥ ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥४६॥
ॐ परमात्मने नमः ॥४७॥ ॐ सोमसूर्य्याग्निलोचनाय नमः ॥४८॥

ॐ हविषे नमः ॥४९॥ ॐ यज्ञमयाय नमः ॥५०॥
ॐ पञ्चवक्त्राय नमः ॥५१॥ ॐ सदाशिवाय नमः ॥५२॥
ॐ विश्वेश्वराय नमः ॥५३॥ ॐ वीरभद्राय नमः ॥५४॥
ॐ गणनाथाय नमः ॥५५॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥५६॥
ॐ हिरण्यरेतसे नमः ॥५७॥ ॐ दुर्द्धर्षाय नमः ॥५८॥
ॐ गिरीशाय नमः ॥५९॥ ॐ गिरिशाय नमः ॥६०॥
ॐ अनघाय नमः ॥६१॥ ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः ॥६२॥
ॐ भर्गाय नमः ॥६३॥ ॐ गिरिधन्वने नमः ॥६४॥
ॐ गिरिप्रियाय नमः ॥६५॥ ॐ अष्टमूर्त्तये नमः ॥६६॥
ॐ अनेकात्मने नमः ॥६७॥ ॐ सात्त्विकाय नमः ॥६८॥
ॐ शुभविग्रहाय नमः ॥६९॥ ॐ शाश्वताय नमः ॥७०॥
ॐ खण्डपरशवे नमः ॥७१॥ ॐ अजाय नमः ॥७२॥

ॐ पाशविमोकाय नमः ॥७३॥ ॐ कृत्तिवाससे नमः ॥७४॥
ॐ पुरारातये नमः ॥७५॥ ॐ भगवते नमः ॥७६॥
ॐ प्रथमाधिपाय नमः ॥७७॥ ॐ मृत्युञ्जयाय नमः ॥७८॥
ॐ सूक्ष्मतनवे नमः ॥७९॥ ॐ जगद्व्यापिने नमः ॥८०॥
ॐ जगद्गुरवे नमः ॥८१॥ ॐ व्योमकेशाय नमः ॥८२॥
ॐ महासेनाय नमः ॥८३॥ ॐ जनकाय नमः ॥८४॥
ॐ चारुविक्रमाय नमः ॥८५॥ ॐ रुद्राय नमः ॥८६॥
ॐ भूतपतये नमः ॥८७॥ ॐ स्थाणवे नमः ॥८८॥
ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥८९॥ ॐ दिगम्बराय नमः ॥९०॥
ॐ मृडाय नमः ॥९१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥९२॥
ॐ देवाय नमः ॥९३॥ ॐ महादेवाय नमः ॥९४॥
ॐ अव्ययाय नमः ॥९५॥ ॐ हरये नमः ॥९६॥

ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः ॥९७॥ ॐ भगनेत्रभिदे नमः ॥९८॥
ॐ अपवर्गप्रदाय नमः ॥९९॥ ॐ अव्यग्राय नमः ॥१००॥
ॐ अव्यक्ताय नमः ॥१०१॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥१०२॥
ॐ दक्षाध्वरहराय नमः ॥१०३॥ ॐ सहस्राक्षाय नमः ॥१०४॥
ॐ तारकाय नमः ॥१०५॥ ॐ हराय नमः ॥१०६॥
ॐ सहस्रपदे नमः ॥१०७॥ ॐ श्रीपरमेश्वराय नमः ॥१०८॥

धूपम्—ॐ यातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तें बभूवंतेधनुं÷ ॥
तयास्म्मान्विश्वतस्त्वमंयक्ष्मयापरिं भुज ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः धूपम् समर्पयामि।

दीपम्—ॐ चन्द्रमामनंसोजातश्चक्षोः सूर्यो ऽअजायत ॥ श्रोत्रांद्वायुश्चं प्राणश्चा मुखांदग्निरंजायत ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दीपम् समर्पयामि।

नैवेद्यम्—ॐ नाभ्यां ऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौः समंवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथांलोकाँ२ ॥ ऽअंकल्पयन् ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नैवेद्यम्समर्पयामि।

ऋतुफलम्—ॐ यत्पुरुषेणहविषा देवायज्ञ मतन्वत॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्यंग्रीष्म ऽइद्ध्मः शरद्धविः॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः ऋतुफलानि समर्पयामि।

करोद्वर्त्तनार्थेगन्धम्—ॐ अंशुना ते अंशुः पृच्यताम्परुषा परुः÷। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः करोद्वर्त्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—ॐ नमः÷पर्णायचपर्णशदायचनमः ऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमःऽआखिदतेचप्प्रखिदतेचनमःऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्चवोनमोनमोवः किरिकेभ्योदेवानाहृदयेभ्योनमोव्विचिन्वत्केभ्यो नमोव्विक्षिणत्केभ्यो नमःऽआनिर्हतेभ्यः÷॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः एला-लवंग-पूगीफलं ताम्बूलम् समर्पयामि।

अखण्ड श्रीफलम्—ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जंः शतक्रतो॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः अखण्डश्रीफलं समर्पयामि।

दक्षिणा द्रव्यम्—ॐ हिरण्यगर्भ ऽसमवर्त्त ताग्रेभूतस्यजातऽ पतिरेकऽआसीत्॥ स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा व्विधेम॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दक्षिणाद्रव्यम् समर्पयामि।

आरार्तिक्यम्—ॐ इदꣳ हविऽप्रजनंनम्मेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगण ँस्वस्तये॥ आत्क्मसनिंप्रजासनिंलोकसन्न्यंभयसनिं॥ अग्निऽप्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आरार्तिक्यम् समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिः—ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्म्माणिप्रथमान्न्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानः÷सचन्त यत्रपूर्व्वेसाद्ध्याऽसन्तिदेवाऽ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा—ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः÷। तेषां ँसहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्म्मसि॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

षडङ्गन्यासः-

मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहती छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे विनियोगः।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमंतनो त्वरिष्टं यज्ञ० समिमं दधातु। विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामोऽ३ँ॥ प्रतिष्ठ॥

ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥

अबोद्ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिरोन्यासे विनियोगः।

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवा यतीमुषासम्। यह्वा ऽइव प्रवया मुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिखान्यासे विनियोगः।

ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिम्पृथिव्याव्वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविर्ठ० सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्तदेवाः॥

ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥

मर्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्माणि देवता विराट् छन्दः कवचन्यासे विनियोगः

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवामदन्तु॥

ॐ कवचाय हुम् ॥ ४ ॥

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप् छन्दः नेत्रन्यासे विनियोगः।

ॐ व्विश्वतश्च्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखो व्विश्व तो बाहुरुत व्विश्वतस्प्पात्। सं बाहुब्भ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥

मा नस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एको रुद्रो देवता जगती छन्दः अस्त्रन्यासे विनियोगः।

ॐ मा नः स्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

॥ श्रीः ॥

अथ शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी

अथ प्रथमोऽध्यायः

श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानि गर्भधमा त्त्वमजासि गर्भधम् ॥ १ ॥ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्त्य

नुष्टुप्पङ्क्त्यासह ॥ बृहत्त्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तुत्त्वा ॥ २ ॥ द्विपदा षाश्च्चतुष्पदास्त्रिपदा षाश्च्च षट्पदाः ॥ व्विच्छन्दा षाश्च्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्यन्तुत्त्वा ॥ ३ ॥ सहस्तोमाः सहछन्दस ऽआवृतः सहप्रमाऽऋषयः सप्तदैव्याः ॥ पूर्व्वेषाम्पन्थामनुदृश्य धीराऽअन्वालेभिरेरत्थ्योनरश्मीन् ॥ ४ ॥ ॐ षज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदुसुप्तस्य तथैवैति ॥ दूरङ्ग

मज्ज्योतिषाज्ज्योतिरेकन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ५ ॥ येनकर्म्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञे कृण्वन्तिविदथेषुधीराः ॥ यदपूर्व्वंयक्षमन्तः प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ६ ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ७ ॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्व्वम् ॥ येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मे

मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ८ ॥ यस्मिन्नृचः सामयजूꣳषियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः ॥ यस्मिँश्चित्तꣳसर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ९ ॥ सुषारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिनऽइव ॥ हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ १० ॥

इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

हरिं ÷ ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्स्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ॥ पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३ ॥

त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ÷ ॥ ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ ४ ॥ ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः ॥ स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्याग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः

सामानिजज्ञिरे ॥ छन्दांꣳसिजज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्त
स्म्मादजायत ॥ ७ ॥ तस्म्मादश्वाऽअजायन्त
येकेचोभयादतः ।गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्मा
ज्जाताऽअजावयः ॥ ८ ॥ तंय्ज्ञम्बर्हिषि
प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः ॥ तेनदेवाऽअयजन्त
साध्याऽऋषयश्च ये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं
व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ॥
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरूपादा

ऽउच्यते ॥ १० ॥ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहू
राजन्यः कृतः ॥ ऊरूतदस्यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ
शूद्रोऽअजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमामनसोजा
तश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्च्च
प्राणश्च्चमुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥नाभ्या
ऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत ॥
पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ ॥
ऽअकल्पयन् ॥ १३ ॥यत्पुरुषेणहविषा

देवायज्ञमतन्वत ॥ व्वसन्तोऽस्यासी
दाज्यङ्ग्रीष्मऽइद्ध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ॥
देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्
॥ १५ ॥यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणि
प्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्त
यत्रपूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः ॥ १६ ॥ अद्भ्यः
सम्भृतः पृथिव्यैरसाच्चव्विश्वकर्म्मणः

समवर्त्तताग्रे ॥ तस्यत्त्वष्टाव्विदधद्रूपमे
तितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्रे ॥ १७ ॥
व्वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्ण्णन्तमसः
परस्तात् ॥ तमेवव्विदित्त्वातिमृत्युमेतिनान्यः
पन्थाव्विद्यतेऽयनाय ॥१८ ॥ प्रजापतिश्चरति
गर्भेऽअन्तरजायमानोबहुधाव्विजायते ॥
तस्य योनिम्परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह त
स्थुर्भुवनानिव्विश्वा ॥ १९ ॥ योदेवेभ्यः

ऽआतपंतिषोदेवानांम्पुरोहितः ॥ पूर्व्वो
षोदेवेभ्योंजातोनमोंरुचायब्ब्राह्मंये ॥ २० ॥
रुचम्ब्राह्मञ्जनयंन्तोदेवाऽअग्रेतदंब्ब्रुवन् ॥
यस्त्वैवंब्ब्राह्मणोव्विद्यात्तस्यंदेवाऽअंसन्न्वशें
॥ २१ ॥श्रीश्चंतेलक्ष्मी श्चपत्न्यांवहोरात्रे
पार्श्वेनक्षंत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तंम् ॥ इष्णन्निं
षाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वलोकम्मंऽइषाण ॥ २२ ॥

इति रुद्रे द्वितीयोऽध्याय ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

हरिः ॐ आशुः शिशानोव्वृषभोनभीमोघं
नाघनःक्षोभंणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रंदनोनिमिष
ऽएंकवीरःशतंसेनांऽअजयत्साकमिन्द्रंः ॥ १ ॥
सङ्क्रन्दंनेनानिमिषेणंजिष्णुनांयुत्क्कारेणं
दुश्च्यवनेनंधृष्णुनां ॥ तदिन्द्रेंणजयत
तत्संहद्ध्वंध्युधोंनरऽइषुंहस्तेनव्वृष्णां ॥ २ ॥
सऽइषुंहस्तैः सनिंषङ्गिभिंर्व्वशीसꣳस्त्रष्टा

सयुधऽइन्द्रोगणेन ॥ सꣳसृष्टजित्सोमपा
बाहुशर्द्ध्युग्रधन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥
बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ २ ॥
ऽअपबाधमानः ॥ प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा
जयन्न स्माकमेद्ध्यविता रथानाम् ॥ ४ ॥
बलविज्ञायस्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी
सहमानऽउग्रः ॥ अभिवीरोऽअभिसत्त्वा
सहोजाजैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित् ॥ ५ ॥
गोत्रभिदङ्गोविदं वज्रबाहु जयन्तमज्म

प्रमृणन्तमोजसा ॥ इमꣳसंजाताऽअनुवीर
यद्ध्वमिन्द्रꣳसखायोऽअनुसꣳरभद्ध्वम् ॥ ६ ॥
अभिगोत्राणि सहसा गाहमानो दयो वीरः
शतमन्युरिन्द्रः ॥ दुश्च्यवनः पृतनाषाड्
युद्ध्योऽस्माकꣳसेनाऽअवतु प्रयुत्सु ॥ ७ ॥
इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः
पुरऽएतु सोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जती
नाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ८ ॥
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञऽआदित्या-

नाम्मरुताᳬशर्द्धऽउग्रम् ॥ महामनसाम्भुव
नच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयतामुदस्थात् ॥ ९ ॥
उद्धर्षयमघवन्नायुधान्युत्सत्त्वनाम्मामका-
नाम्मनाᳬसि ॥ उद्वृत्रहन्वाजिनांव्वाजि-
नान्युद्रथानाञ्जयतांᳬयन्तुघोषाः ॥ १० ॥
अस्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्वजेष्वस्माकंᳬया
ऽइषवस्ताजयन्तु ॥अस्माकंव्वीराऽउत्तरे
भवन्त्वस्माँ२ऽउदेवाऽअवताहवेषु ॥ ११ ॥

अमीषांञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्तीगृहाणाङ्गान्यप्वे
परेहि ॥अभिप्रेहि निर्द्दहहृत्सुशोकैरन्धेना
मित्रास्तमसासचन्ताम् ॥ १२ ॥ अवसृष्टा
परापतशरव्येब्ब्रह्मसᳬशिते ॥ गच्छामित्रान्प्र
पद्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः ॥ १३ ॥ प्रेता
जयतानरऽइन्द्रोवः शर्म्मयच्छतु ॥ उग्रावः सन्तु
बाहवोनाधृष्ट्यायथासथ ॥ १४ ॥ असौयासेना
मरुतः परेषामभ्यैतिनऽओजसास्पद्धमाना ॥

ताङ्गूं हत्तमसापंव्व्रतेन षथामीऽअन्न्यो
ऽअन्न्यन्नजानन् ॥ १५ ॥ षत्रंबाणाऽसम्पतंन्ति
कुमाराव्विंशिखाऽइंव ॥ तन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पति
रदिंतिः शर्म्मंषच्छतुव्विश्वाहाशर्म्मंषच्छतु
॥ १६ ॥मर्म्माणिते व्वर्म्मणाच्छादयामि
सोमंस्त्वाराजामृतेनानुंवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरींयो
व्वसंगास्तेकृणोतुजयंन्तन्त्वानुंदेवामंदन्तु ॥ १७ ॥

इति रुद्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

हरिः ॐ व्विब्भ्राड्बृहत्पिंबतुसोम्म्यम्मद्ध्वा
युर्द्दधंद्यज्ञपंतावविंहुतम् ॥ व्वातंजूतोषो
ऽअंभिरक्षंतित्मनांप्प्रजाऽपुंपोषपुरुधाव्वि
रांजति ॥ १ ॥उदुत्यञ्जातवेंदसन्देवंव्वंहन्ति
केतवंः ॥ दृशेव्विश्वांय सूर्य्यम् ॥ २ ॥
षेनांपावकचक्षंसाभुरण्यन्तञ्जनाँ२ ॥ऽअनुं ॥
त्वंव्वंरुणपश्यंसि ॥ ३ ॥ दैव्व्यांवद्ध्वर्य्यू

ऽआगंतꣳरथेंनसूर्ऽर्षत्वचा ॥ मद्ध्वांयज्ञꣳ
समंञ्जाथे ।।तम्प्रत्क्रथाऽयंव्वेनश्चित्रन्देवानांम्
॥ ४ ।।तम्प्रत्क्रथांपूर्व्वथां विश्श्वथेमथांज्ज्येष्ठुतां
तिम्बर्हिषदंꣳस्वर्व्विदम् ॥ प्प्रतीचीनंव्वृजनंन्दोह
सेधुनिंमाशुञ्जयंन्तमनुयासुव्वर्द्धसे ॥ ५ ॥
अयंव्वेनश्चोंदयत्पृश्निंगर्ब्भाज्ज्योतिंर्ज्जरायू
रजंसोव्विमानें ॥ इमम्पाꣳसंङ्गमेसूर्ऽर्यस्य
शिशुन्नव्विप्प्रांमतिभींरिहन्ति ॥ ६ ॥

चित्रन्देवानामुदंगादनींकञ्चक्षुंर्मित्रस्य
व्वरुंणस्याग्ग्नेः ॥ आप्प्राद्यावांपृथिवी
ऽअन्तरिंक्षꣳसूर्य्यंऽआत्त्माजगं तस्तस्थुषंश्च्च
॥ ७ ।।आनऽइडांभिर्व्विदथेंसुशस्तिव्विश्वानंरꣳ
सवितादेवऽएंतु ॥ अपिषथांषुवानोमत्संथानो
व्विश्वञ्जगंदभिपित्त्वेमंनीषा ॥ ८ ॥ यद्द्यकच्चं
व्वृत्रहन्नुदगांऽअभिसूंर्य्य ।।सर्व्वन्तदिंन्द्रतेव्वशें
॥९ ।।तरणिंर्व्विश्वदंर्शतोज्ज्योतिष्कृदंसिसूर्य्य ॥

व्विश्वमाभासिरोचनम् ॥ १० ॥ तत्सूर्य्यस्य
देवत्वन्तन्महित्वम्मध्याकर्त्तोर्व्वितंतꣳ
सञ्जभार ॥ यदेदयुक्तहरितः सधस्थादा
द्द्रात्रीव्वासस्तनुतेसिमस्मै ॥ ११ ॥ तन्मित्रस्य
व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपङ्कृणुतेद्यो
स्पस्थे ॥ अनन्तमन्न्यद्रुशदस्यपाजः कृष्णा
मन्न्यद्धरितꣳ सम्भरन्ति ॥ १२ ॥ बण्णमहाँ२ ॥
ऽअंसिसूर्य्य बडादित्त्य महाँ२ ॥ऽअंसि ॥

महस्तेसतोमहिमापनस्यतेद्धादेवमहाँ२ ॥
ऽअंसि ॥ १३ ॥ बट्सूर्य्य श्रवसामहाँ२ ॥ऽ
अंसिसत्रादेवमहाँ२ ॥ऽअंसि ॥ मन्हादेवानाम
सुर्य्यः पुरोहितोव्विभुज्योतिरदाभ्यम्
॥ १४ ॥श्रायन्तऽइवसूर्य्यव्विश्वेदिन्द्रस्य
भक्षत ।व्वसूनिजातेजनमानऽओजसाप्प्रति
भागन्नदीधिम ॥१५ ॥ अद्यादेवाऽउदितासूर्य्य-
स्यनिरहंसꣳ पिपृता निरवद्यात् ॥ तन्नोमित्रो

व्वरुणोमामहन्तामदितिꣳ सिन्धुं÷पृथिवी ऽउतद्यौ ॥१६॥आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥हिरण्ययेन सवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ १७ ॥

इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

हरिः÷ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः÷ ॥ बाहुब्भ्यामुतते नमः÷ ॥ १ ॥ यातेरुद्रशिवातनूरघोराऽपापकाशिनी ॥ तयानस्तन्व्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीꣳ पुरुषञ्जगत् ॥ ३ ॥ शिवेनव्वचसात्त्वागिरि

शाच्छाव्वदामसि ॥ यथान्नꣳ सर्व्वमिज्जगं
दयक्ष्मꣳ सुमनाऽअसत् ॥ ४ ॥ अद्ध्यवोच
दधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ॥ अहीँश्च्च
सर्व्वाञ्जभयन्त्सर्व्वाश्च्चयातुधान्न्योऽधराचीꣳ
परासुव ॥ ५ ॥असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउत
बब्भ्रुः सुमङ्गलः ॥ येचैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्षु
श्श्रिताः सहस्रशोऽवैषाᳬ हेडऽईमहे ॥ ६ ॥
असौयोऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोव्विलोहितꣳ ॥

उतैनं ङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यꣳ सदृष्टोमृड
यातिनꣳ ॥ ७ ॥ नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्रा
क्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्ते
भ्योऽकरन्नमः ॥ ८ ॥ प्रमुञ्चधन्व्वनस्त्वमु-
भयोरात्क्न्योर्ज्याम् ॥ याश्च्चतेहस्तऽ
इषवꣳ पराताभगवोव्वप ॥ ९ ॥ व्विज्ज्य
न्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्योबाणवाँ२ ॥ऽउत ॥
अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥ १० ॥

षातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥
तयास्म्माञ्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरि
भुज ॥ ११ ॥ परितेधन्वनोहेतिरस्म्मान्व्वृणक्तु
व्विश्वतः ॥ अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधे
हितम् ॥ १२ ॥ अवतत्त्यधनुष्ट्वꣳसहस्रा
क्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्यशल्यानाम्मुखा
शिवोनः सुमनाभव ॥ १३ ॥ नमस्तऽआयु
धायानाततायधृष्ण्वे ॥ उभाभ्यामुततेनमो

बाहुभ्यान्तवधन्वने ॥ १४ ॥ मानोमहान्त
मुतमानोऽअर्भ्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽ
उक्षितम् ॥ मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः
प्प्रियास्तन्व्वोरुद्ररीरिषः ॥ १५ ॥ मानस्तोके
तनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषु
रीरिषः ॥ मानोव्वीरान्नुद्रभामिनो
व्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे ॥ १६ ॥
नमोहिरण्यबाहवेसेनान्येदिशाञ्चपतये

नमोनमोव्वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पत
ये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते
पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने
पुष्टानाम्पतये नमो नमो बब्भ्लुशाय ॥ १७ ॥
नमो बब्भ्लुशायव्व्याधिनेऽन्नानाम्पतये न
मो नमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमो नमो
रुद्रायातताविनेक्षेत्राणाम्पतये नमो नमः सूताया
हन्त्यैव्वनानाम्पतये नमो नमो रोहिताय ॥ १८ ॥

नमो रोहितायस्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमो नमो
भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमो नमो
मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नमोऽउच्चैर्घो
षायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमो नमः
कृत्स्नायतया ॥ १९ ॥ नमः कृत्स्नायतयाधावते
सत्त्वनाम्पतये नमो नमः सहमानाय निव्व्याधिन
ऽआव्व्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे
ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे

परिचरायारण्यानाम्पतयेनमोनमोव्वञ्चते ॥ २० ॥
नमो व्वञ्चते परि वञ्चते स्तायूनाम्पत
येनमोनमोनिषङ्गिणऽइषुधिमतेतस्करानाम्पत
येनमोनमः सृकायिभ्योजिघाँ सद्भ्योमुष्णताम्पतयेनमोनमोऽसिमद्भ्यो
नक्तञ्चरद्भ्योविकृन्तानाम्पतयेनमः ॥ २१ ॥
नमऽउष्णीषिणेगिरिचरायकुलुञ्चानाम्पत
येनमोनमऽइषुमद्भ्योधन्वायिभ्यश्च

वोनमोनमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्य
श्चवोनमोनमऽआयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्य
श्चवोनमोनमोव्विसृजद्भ्यः ॥ २२ ॥
नमोव्विसृजद्भ्योव्विद्ध्यद्भ्य
श्चवोनमोनमः स्वपद्भ्योजाग्रद्भ्य
श्चवोनमोनमः शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्चवोनमोनमः सभाभ्यः ॥ २३ ॥

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नमः आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नमः उगणाभ्यस्तृंहतीभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यः ॥ २४ ॥ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः ॥ २५ ॥

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥ २६ ॥ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो

नमोनमः ऽश्वनिभ्योमृगयुभ्यश्च वोनमोनमः
ऽश्वभ्यः ॥ २७ ॥ नमः ऽश्वभ्यः ऽश्वपति
भ्यश्च वोनमोनमो भवाय च रुद्राय च नमः
शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च
शितिकण्ठाय च नमः कपर्द्दिने ॥ २८ ॥
नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः
सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय
च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय च इषुमते च नमो

ह्रस्वाय ॥ २९ ॥ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च नमो
बृहते च व्वर्षीयसे च नमो व्वृद्धाय च सवृधे च नमो
ऽग्र्याय च प्रथमाय च नमः ऽआशवे ॥ ३० ॥
नमः ऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्या
य च नमः ऽ ऊम्र्याय चावस्वन्न्याय च नमो ना
देयाय च द्वीप्याय च ॥ ३१ ॥ नमो ज्ज्येष्ठाय
च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय चापरजाय
च नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो

जघन्यायच बुध्न्यायचनमः सोब्भ्यांय ॥ ३२ ॥
नमः सोब्भ्यांयचप्प्रतिसर्य्यायचनमोषा
म्यांयच क्षेम्यांयच नमः श्लोक्क्यां
यचावसान्यायचनमंऽउर्व्वर्य्यायचखल्ल्यांयच
नमोव्वन्न्यांय ॥ ३३ ॥ नमोव्वन्न्यांयचकक्ष्यां
यचनमं÷श्रवायंचप्प्रतिश्रवायंचनमंऽ
आशुषेणायचा शुरंथायचनमः शूरांयचा
वभेदिनेंचनमोंबिल्म्मिनें ॥ ३४ ॥ नमोंबिल्म्मिनें

चकवचिनेंचनमोंव्वर्म्मिणें चव्वरूथिनेंचनमं÷
श्रुतायंचश्रुतसेनायंचनमोंदुन्दुभ्यायचाह
नन्न्यायचनमोंधृष्णवें ॥ ३५ ॥ नमोंधृष्णवें
चप्प्रमृशायंचनमोंनिषङ्गिणेंचेषुधिमतें
चनमंस्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेंचनमं÷स्वायुधायं
चसुधन्व्वनेच ॥ ३६ ॥ नमः स्त्रुत्यांयचपथ्यांय
चनमः काट्यांयचनीप्प्यांयचनमः कुल्ल्यांय
चसरस्यायचनमोंनादेया यंचव्वैशन्तायंचनमः

कूप्प्याय ॥ ३७ ॥ नमः कूप्प्यायचावट्ट्या
यचनमोव्वीद्ध्यायचातप्प्यायचनमो
मेग्घ्यायचव्विद्द्युत्यायचनमोव्वर्ष्ष्यायचा
व्वर्ष्ष्यायचनमोव्वात्त्याय ॥ ३८ ॥
नमोव्वात्त्यायचरेष्म्यायचनमोव्वास्तव्व्या
यचव्वास्तुपायचनमः सोमायचरुद्रायचन
मस्ताम्म्रायचारुणायचनमः शङ्गवे ॥ ३९ ॥
नमः शङ्गवेचपशुपतयेचनमऽउग्ग्रायच

भीमायचनमोऽग्ग्रेवधायचदूरेवधायचनमो
हन्त्रेचहनीयसेचनमोव्वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यो
नमस्तारायः ॥ ४० ॥ नमः शम्भवायचमयो
भवायचनमः शङ्करायचमयस्करायचनमः
शिवायचशिवतरायच ॥ ४१ ॥ नमः पार्ष्ष्याय
चावार्ष्ष्यायचनमः प्रतरणायचोत्तरणा
यचनमस्तीर्थ्यायचकूल्ल्यायचनमः
शष्प्यायचफेन्न्यायचनमः सिकत्त्याय ॥ ४२ ॥

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः ।
किंशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च
पुलस्तये च नमोऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च
नमो व्रज्याय ॥ ४३ ॥ नमो व्रज्याय च
गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च
नमो हृदयाय च निवेष्याय च नमः काट्याय च
गह्वरेष्ठाय च नमः शुष्क्याय ॥ ४४ ॥ नमः
शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाँसव्याय च

रजस्याय च नमो लोप्याय च उलप्याय च
नमोऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च नमः पर्णाय
॥ ४५ ॥ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नमः
ऽउदुरमाणाय च अभिघ्नते च नमोऽआखिदते च
प्रखिदते च नमोऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्य
श्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाँ
हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो
विक्षिणत्केभ्यो नमोऽआनिर्हतेभ्यः ॥ ४६ ॥

द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्र नील लोहित ॥
आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचं
नः किञ्चनाममत् ॥ ४७ ॥ इमारुद्रायतवसे
कपर्द्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः ॥ यथाशम
सद्द्विपदेचतुष्पदेव्विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्न
नातुरम् ॥ ४८ ॥ यातेरुद्रशिवातनूः शिवा
विश्वाहाभेषजी ॥ शिवारुतस्यभेषजीतयानो
मृडजीवसे ॥ ४९ ॥ परिनोरुद्रस्यहेतिर्व्वृणक्तु

परित्वेषस्यदुर्म्मतिरघायोः ॥ अवस्थिरामघ
वद्भ्यस्तनुष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृड
॥ ५० ॥ मीढुष्टमशिवतमशिवोनः ÷
सुमनाभव ॥ परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधाय
कृत्तिंव्वसानऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि
॥ ५१ ॥ व्विकिरिद्रव्विलोहितनमस्तेऽअ
स्तुभगवः ॥ यास्तेसहस्रंहेतयोऽन्यमस्मन्निव
पन्तुताः ॥ ५२ ॥ सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तव

हेतयः ॥ तासामीशानोभगवः पराचीनामुखा
कृधि ॥ ५३ ॥ असंङ्ख्यातासहस्राणि येरुद्रा
ऽअधिभूम्याम् । तेषाᳬसहस्रयोजनेऽवधन्वानि
तन्मसि ॥ ५४ ॥ अस्मिन्महत्त्यर्णवे
ऽन्तरिक्षे भवाऽअधि ॥ तेषाᳬसहस्रयोजने
ऽवधन्वानितन्मसि ॥ ५५ ॥ नीलग्रीवाः
शितिकण्ठादिवꣳरुद्राऽउपश्रिताः ॥
तेषाᳬसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ५६ ॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः
क्षमाचराः ॥ तेषाᳬसहस्रयोजनेऽवधन्वानि
तन्मसि ॥ ५७ ॥ ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा
नीलग्रीवाव्विलोहिताः ॥ तेषाᳬसहस्र
योजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ५८ ॥ येभूताना
मधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ॥
तेषाᳬसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ५९ ॥
येपथाम्पथिरक्षयऽऐलबृदाऽआयुर्व्वुधः ॥

तेषां ँसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ६० ॥
येतीर्थानिप्रचरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गिणः ॥
तेषां ँसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ६१ ॥
येन्नेषुविविद्ध्यन्तिपात्रेषुपिबतोजनान् ॥
तेषां ँसहस्र योजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ६२ ॥
षऽएतावन्तश्च भूयां ँसश्च दिशोरुद्रा
विवितस्थिरे ॥ तेषां ँसहस्रयोजनेऽवधन्वानि
तन्मसि ॥ ६३ ॥ नमोऽस्तुरुद्रेभ्योयेदिवि

येषांवर्षमिषवः ॥ तेभ्योदशप्राचीर्दशं
दक्षिणादशंप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोदध्वा ॥
तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुते
यन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः
॥ ६४ ॥ नमोऽस्तुरुद्रेभ्योयेऽन्तरिक्षेयेषां
वातऽइषवः ॥तेभ्योदशप्राचीर्दशंदक्षिणा
दशंप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोदध्वाः ॥ तेभ्योनमो
ऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुते यन्द्विष्मो

षश्च्चंनोद्वेष्टितमेंषाञ्जम्भेंदद्ध्मः ॥ ६५ ॥

नमोंऽस्तुरुद्रेब्भ्योषेपृंथिव्यांऽषेषामन्न

मिषंवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशंदक्षिणादशं

प्प्रतीचीर्द्दशोदींचीर्द्दशोद्ध्र्वाः ॥ तेब्भ्योनमोंऽअ

स्तुतेनोंऽवन्तुतेनोंमृडयन्तुतेषन्द्विष्म्मोषश्च्चंनो

द्वेष्टितमेंषाञ्जम्भेंदद्ध्मः ॥ ६६ ॥

इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

हरिं÷ॐव्वयंसोंमव्व्रतेतवमनंस्तनूषु

बिब्भ्रंतः ॥ प्प्रजावंन्तः सचेमहि ॥ १ ॥

एषतेंरुद्रभागः सहस्वस्त्राऽम्बिंकयातञ्जुं

षस्वस्वाहैषतेंरुद्रभागऽआखुस्तेंपशुः ॥ २ ॥

अवंरुद्द्रमंदीमहषवंदेवन्त्र्यंम्बकम् ॥

षथांनोव्वस्यंसस्क्करद्यथांनः श्श्रेयंसस्क्करद्यथां

नोव्व्यवसाय यांत् ॥ ३ ॥ भेषजमंसिभेषजङ्गवे

ऽश्वायपुरुषायभेषजम् ॥ सुखम्मेषायमेष्यै
॥ ४ ॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि
वर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय
मामृतात् ॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पति
वेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षीय
मामुतः ॥ ५ ॥ एतत्तेरुद्राऽवसन्तेनपरो
मूजवतोऽतीहि ॥ अवततधन्वापिनाकावसः
कृत्तिवासाऽअहिंसन्नः शिवोऽतीहि ॥ ६ ॥

त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषु
त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ॥ ७ ॥ शिवोना
मासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिं
सीः ॥ निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननाय
रायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय ॥ ८ ॥

इति रुद्रे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

हरिः ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च ॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वाचं विक्षिपः स्वाहा ॥ १ ॥ अग्निः हृदयेनाशनिः हृदयाग्रेण पशुपतिः कृत्स्नहृदयेन भवः यक्ना ॥ शर्व्वो मतस्नाभ्यामीशानो मन्युना महादेवो मन्तः पर्शव्ये नोग्रो देवो वनिष्ठुना वसिष्ठुहनुः शिङ्गीनिकोश्याभ्याम् ॥ २ ॥ उग्रो लोहितेन मित्रः

सौव्रत्येन रुद्रो दौर्व्रत्ये नेन्द्रो मप्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठ्यः रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ३ ॥ लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा ॥ माꣳसेभ्यः स्वाहा माꣳसेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा

स्नावभ्यः स्वाहाऽस्थभ्यस्वाहाऽस्थभ्यः
स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा ॥
रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ॥ ४ ॥ आयासाय
स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा
व्वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा ॥ शुचे स्वाहा
शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा
॥ ५ ॥ तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय
स्वाहा तप्साय स्वाहा घर्म्माय स्वाहा ॥ निष्कृत्यै

स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा
॥ ६ ॥ यमाय स्वाहाऽन्तकाय स्वाहा मृत्यवे
स्वाहा ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा
व्विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावा पृथिवीभ्याꣳ
स्वाहा ॥ ७ ॥

इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ अष्टमोऽध्यायः

हरिः ॐ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १ ॥ प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तञ्च मऽआधीतञ्च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रञ्च मे

दक्षश्च मे बलञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥ ओजश्च मे सहश्च मऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यञ्च मऽआधिपत्यञ्च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे

व्वृद्धञ्चमे व्वृद्धिश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्
॥ ४ ॥ (न०) ॥ सत्त्यञ्चमे श्रद्धाचमे जगच्चमे
धनञ्चमे व्विश्वञ्चमे महश्चमे क्रीडाचमे
मोदश्चमे जातञ्चमे जनिष्यमाणञ्चमे
सूक्तञ्चमे सुकृतञ्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ५ ॥
ऋतञ्चमे ऽमृतञ्चमे ऽयक्ष्मञ्चमे ऽनामयच्चमे
जीवातुश्चमे दीर्घायुत्त्वञ्चमे ऽनमित्रञ्चमे
ऽभयञ्चमे सुखञ्चमे शयनञ्चमे सूषाश्चमे

सुदिनञ्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ६ ॥ यन्ताचमे
धर्त्ताचमे क्षेमश्चमे धृतिश्चमे व्विश्वञ्चमे
महश्चश्चमे संव्विच्चमे ज्ञात्रञ्चमे सूश्चमे
प्रसूश्चमे सीरञ्चमे लयश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्
॥ ७ ॥ शञ्चमे मयश्चमे प्रियञ्चमे ऽनुकामश्चमे
कामश्चमे सौमनसञ्चमे भगश्चमे द्रविणञ्चमे
भद्रञ्चमे श्रेयश्चमे व्वसीयश्चमे यशश्चमे
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ८ ॥ (न०) ॥ ऊर्क्चमे

सूनृताचमेपयश्चमेरसश्चमेघृतञ्चमेमधुचमे
सग्धिश्चमे सपीतिश्चमे कृषिश्चमे
वृष्टिश्चमे जैत्रञ्चम औद्भिद्यञ्चमे यज्ञेन
कल्पन्ताम् ॥ ९ ॥ रयिश्चमे रायश्चमे
पुष्टञ्चमे पुष्टिश्चमे विभुचमे प्रभुचमे
पूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्चमे कुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमे
ऽन्नञ्चमेऽक्षुच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १० ॥
वित्तञ्चमे वेद्यञ्चमे भूतञ्चमे भविष्यच्चमे

सुगञ्चमे सुपथ्यञ्चमऽऋद्धञ्चमऽऋद्धिश्चमे
क्लृप्तञ्चमे क्लृप्तिश्चमे मतिश्चमे सुमतिश्चमे
यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ११ ॥ व्रीहयश्चमे
यवाश्चमे माषाश्चमे तिलाश्चमे मुद्गाश्चमे
खल्वाश्चमे प्रियङ्गवश्चमेऽणवश्चमे
श्यामाकाश्चमे नीवाराश्चमे गोधूमाश्चमे
मसूराश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १२ ॥ (न०)
अश्मा चमे मृत्तिका चमे गिरयश्चमे

पर्व्वताश्च्चमेसिकताश्च्चमेव्वनस्पतयश्च्चमे
हिरण्यञ्चमेऽयश्च्चमेश्यामञ्चमेलोहञ्चमे
सीसञ्चमेत्रपुचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १३ ॥
अग्निश्च्चमऽआपश्च्चमेव्वीरुधश्च्चम
ऽओषधयश्च्चमे कृष्टपच्च्याश्च्चमे
ऽकृष्टपच्च्याश्च्चमेग्राम्याश्च्चमेपशव
ऽआरण्याश्च्चमेव्वित्तञ्चमेव्वित्तिश्च्चमे
भूतञ्चमेभूतिश्च्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १४ ॥

व्वसुचमेव्वसतिश्च्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्च्चमे
ऽर्थश्च्चमऽएमश्च्चमऽइत्याचमेगतिश्च्चमे
यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १५ ॥ (न०) ॥
अग्निश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेसोमश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे
सविताचमऽइन्द्रश्च्चमे सरस्वतीचम
ऽइन्द्रश्च्चमेपूषाचमऽइन्द्रश्च्चमेबृहस्पतिं
श्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १६ ॥
मित्रश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेव्वरुणश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे

धाताचंमऽइन्द्रश्चमेत्त्वष्टाचमऽइन्द्रश्चमे
मरुतश्चमऽइन्द्रश्चमेविश्वेचमेदेवा
ऽइन्द्रश्चमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १७ ॥
पृथिवीचंमऽइन्द्रश्चमेऽन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्चमे
द्यौश्चंमऽइन्द्रश्चमेसमाश्चमऽइन्द्रश्चमे
नक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्चमेदिशश्चमऽइन्द्रश्चमे
यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥१८॥ (न०) ॥अंशुश्चंमे
रश्मिश्चमेऽदाभ्यश्चमेऽधिपतिश्चम

ऽउपांशुश्चंमेऽन्तर्यामश्चंमऽऐन्द्रवायं
वश्चंमेमैत्रावरुणश्चंमऽआश्विनश्चंमे
प्रतिप्रस्थानंश्चमेशुक्रश्चंमेमन्थीचंमे
यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १९ ॥ आग्रयणश्चंमे
वैश्वदेवश्चंमेध्रुवश्चंमेवैश्वानरश्चंम
ऽऐन्द्राग्नश्चंमेमहावैश्वदेवश्चमेमरुत्वती
यांश्चमेनिष्केवल्यश्चमेसावित्रश्चंमे
सारस्वतश्चांमे पात्क्रीवतश्चांमे

हारियोजनश्च्चंमेषज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ २० ॥
स्त्रुचंश्च्चमेचमसाश्च्चंमेव्वायव्व्यानिचमे
द्रोणकलशश्च्चंमेग्ग्रावांणश्च्चमेऽधिषवंणे
चमेपूतभृच्चंमऽआधवनीयंश्च्चमेव्वेदिंश्च्चमे
बर्हिश्च्चंमेऽवभृथश्च्चंमेस्वगाकारश्च्चंमे
षज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ २१ ॥ (न०) ॥
अग्ग्निश्च्चंमेघर्म्मश्च्चंमेऽर्क्कश्च्चंमेसूर्य्यश्च्चमे
प्प्राणाश्च्चंमेऽश्वमेधश्च्चंमेपृथिवीचमे
ऽदितिश्च्चमेदितिंश्च्चमेद्यौश्च्चंमेऽङ्गुलंयः

शक्क्करयोदिशंश्च्चमेषज्ञेनंकल्प्पन्ताम्
॥ २२ ॥ व्व्रतञ्चंमऽऋतवंश्च्चमेतपंश्च्चमे
संव्व्त्सरश्च्चंमेऽहोरात्रेऽऊर्व्वष्ठीवेबृहद्रथन्तरे
चंमेषज्ञेनंल्प्पन्ताम् ॥ २३ ॥ (न०) ॥
एकांचमेतिस्त्रश्च्चंमेतिस्त्रश्च्चंमेपञ्चंचमे
पञ्चंचमेसप्तचंमेसप्तचंमेनवंचमेनवंचम
ऽएकांदशचमऽएकांदशचमेत्रयोंदशचमे
त्रयोंदशचमेपञ्चंदशचमेपञ्चंदशचमे
सप्तदंशचमेसप्तदंशचंमेनवंदशचमेनवंदशचम

ऽएकं विꣳशतिश्च्यम ऽएकं विꣳशतिश्च्यमे
त्रयोंवि ꣳशतिश्च्यमे त्रयोंविꣳशतिश्च्यमे
पञ्चंविꣳशतिश्च्यमे पञ्चंविꣳशतिश्च्यमे
सप्तविंꣳशतिश्च्यमे सप्तविंꣳशतिश्च्यमे
नवंविꣳशतिश्च्यमे नवंविꣳशतिश्च्यम
ऽएकंत्रिꣳशच्यम ऽएकंत्रिꣳशच्यमे त्रयंस्त्रिꣳ
शच्यमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ २४ ॥ (न०) ॥
चतंस्त्रश्च्यमे ऽष्टौचंमे ऽष्टौचंमे द्वादंशचमे द्वादंशचमे
षोडंशचमे षोडंशचमे विꣳशतिश्च्यंमे विꣳ

शतिश्च्यंमे चतुंर्विꣳशतिश्च्यमे चतुंर्विꣳ
शतिश्च्यमे ऽष्टाविंꣳशतिश्च्यमे ऽष्टाविंꣳ
शतिश्च्यमे द्वात्रिंꣳशच्यमे द्वात्रिंꣳशच्यमे षट्त्रिंꣳ
शच्यमे षट्त्रिंꣳशच्यमे चत्त्वारिꣳशच्यंमे
चत्त्वारिꣳशच्यंमे चतुश्च्यत्वारिꣳशच्यमे
चतुंश्च्यत्त्वारिꣳशच्यमे ऽष्टाचंत्त्वारिꣳ शच्यमे
यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ (न०) ॥
त्र्यविंश्च्यमे त्र्यवीचंमे दित्यवाट्चंमे दित्यौही

चंमेपञ्चांविश्च्चमेपञ्चावीचंमेत्रिवत्सश्च्चंमे
त्रिवत्साचंमेतुर्ष्वाट्चंमेतुर्ष्वौहीचंमे
यज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ २६ ॥ पष्ठुवाट्चंमे
पष्ठौहीचंमऽउक्षाचंमेव्वशाचंमऽऋषभश्च्चंमे
व्वेहच्चंमेऽनड्वाँश्च्चंमेधेनुश्च्चंमेयज्ञेनं
कल्प्पन्ताम् ॥ २७ ॥ (न०) ॥ व्वाजांयस्वाहां
प्प्रसवायस्वाहांऽपिजायस्वाहाक्रतंवेस्वाहा
व्वसंवेस्वाहांऽहर्प्पतंयेस्वाहाह्नेंमुग्धायस्वाहां

मुग्धायंव्वैनꣳशिनायस्वाहांव्विनꣳशिनं
ऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्यांयभौवनायस्वाहा
भुवंनस्यपतंयेस्वाहाधिंपतयेस्वा हांप्प्रजापंतये
स्वाहां ॥ इयन्तेराण्मित्रायंयन्तासिषमंन
ऽऊर्ज्जेत्वाव्वृष्ट्यैत्वाप्प्रजानान्त्वाधिंपत्त्याय
॥ २८ ॥ आयुर्ष्यज्ञेनंकल्प्पतांप्प्राणोयज्ञेनं
कल्प्पताञ्चक्षुर्ष्यज्ञेनं कल्प्पता ँ श्श्रोत्रंयज्ञेनं
कल्प्पतांव्वाग्यज्ञेंनकल्प्पताम्मनोंयज्ञेनं

कल्प्पतामात्क्मायज्ञेनकल्प्पतांब्रह्मायज्ञेन
कल्प्पताज्ज्योतिर्ष्यज्ञेनकल्प्पता ँ
स्वर्ष्यज्ञेनकल्प्पतांपृष्ठं ँ ष्यज्ञेनकल्प्पतां
यज्ञोयज्ञेनकल्प्पताम् ॥ स्तोमश्च्चयजुश्च्च
ऽऋक्च्चसामंचबृहच्चरथन्तरञ्च ॥ स्वर्द्देवा
ऽअगन्मामृताऽअभूमप्प्रजापतेः प्प्रजाऽअभूम
व्वेट्स्वाहा ॥ २९ ॥

इत्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ शान्त्यध्यायः

हरिः ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुः प्प्रपद्ये
सामंप्प्राणम्प्रपद्ये चक्षुः श्श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥
व्वागोजः सहौजोमयिप्प्राणापानौ ॥ १ ॥
यन्मेछिद्रञ्चक्षुषोहृदयस्यमनसोव्वातिं
तृण्णम्बृहस्प्पतिर्म्मे तद्दधातु ॥शन्नोभवतु
भुवनस्ययस्प्पतिः ॥ २ ॥ भूर्भुवः स्वः ।
तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि ॥

धियोवोनः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ कयानश्चित्र
ऽआभुवदूती सदावृधः सखा ॥ कयाश
चिष्ठ्ठयाव्वृता ॥ ४ ॥ कस्त्वासत्योमदानाम्महि
ष्ठ्ठोमत्सदन्धसः ॥ दृढाचिदारुजेव्वसु
॥ ५ ॥ अभीषुणः सखीनामविताजरितॄणाम् ॥
शतम्भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥ कयात्वन्न
ऽऊत्याभिप्रमन्दसेव्वृषन् ॥ कयास्तोतृभ्य
ऽआभर ॥ ७ ॥ इन्द्रोव्विश्वस्यराजति ॥ शन्नो

ऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥ ८ ॥ शन्नोमित्रः
शंव्वरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रो
बृहस्पतिः शन्नोव्विष्णुरुरुक्रमः ॥ ९ ॥
शन्नोव्वातः पवता ँ शन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु
॥ १० ॥ अहानिशम्भवन्तुनः शꣳरात्रीः
प्रतिधीयताम् ॥ शन्नऽइन्द्राग्नीभव तामवोभिः
शन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्या ॥ शन्नऽ इन्द्रापूषणा

व्वाजंसातौशमिन्द्रासोमांसुवितायशंय्योः
॥ ११ ॥ शन्नोंदेवीरभिष्टंयऽआपोंभवन्तु
पीतयें ॥ शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः ॥ १२ ॥ स्योना
पृथिविनोभवानृक्षरानिवेशंनी ॥ यच्छांनः शर्म्म
सप्प्रथाः ॥ १३ ॥ आपोहिष्ठामंयोभुवस्तानं
ऽऊर्जेदधातन ॥ महेरणांयचक्षंसे ॥ १४ ॥
योवः शिव तमोरसस्तस्यंभाजयतेहनः ॥
उशतीरिवमातरः ॥ १५ ॥ तस्म्मा
ऽअरं ङ्ग मामवो यस्य क्षायांय जिन्वथ ॥

आपोंजनयंथाचनः ॥ १६ ॥ द्यौः शान्तिः
रन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरो
षंधयः शान्तिः ॥ व्वनस्पतंयः शान्तिर्व्विश्वे
देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः
शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ १७ ॥
दृतेदृꣳहंमामित्रस्यंमाचक्षुंषासर्व्वांणिभूतानि
समींक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहञ्चक्षुंषासर्व्वांणि
भूतानिसमींक्षे ॥ मित्रस्यचक्षुंषासमींक्षा
महे ॥ १८ ॥ दृतेदृꣳहंमा । ज्ज्योक्तेसन्दृशिं

जीव्व्यास ञ्ज्योक्तेसन्दृशिजीव्व्यासम्
॥ १९ ॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते
ऽअस्त्वर्च्चिषे ॥ अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः
पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥ २० ॥
नमस्तेऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ॥
नमस्ते भगवन्नस्तु यतꣳ स्वः समीहसे ॥ २१ ॥
यतो यतꣳ समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नः
कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नꣳ पशुभ्यः ॥ २२ ॥
सुमित्रियान ऽआप ऽओषधयꣳ सन्तु दुर्म्मित्रि

यास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च
वयन्द्विष्मः ॥ २३ ॥ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ता
च्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः
शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च्च शरदः
शतात् ॥ २४ ॥

इति शान्त्यध्यायः ।

अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः ।

हरिः ॐ स्वस्तिन ऽइन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्याम्पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ व्विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो

व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्द्धर्वो ऽसि ॥ व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्त्या देवता मरुतो देवता व्विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥ ४ ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां

भवोद्भवाय नमः ॥ ५ ॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ ६ ॥ अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ७ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे

महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम् ॥ ९ ॥

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्ते ऽअस्तुमामाहिꣳ सीः ॥ निवर्त्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषाय

सुप्रजास्त्वायसुवीर्य्यायं ॥ १० ॥

ॐ व्विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥

यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ११ ॥ ॐ द्यौ ऽशान्ति

रन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापꣳ शान्ति

रोषधयꣳ शान्तिः ॥ व्वनस्पतयꣳ शान्तिर्व्विश्वे

देवा ऽशान्तिर्ब्रह्म शान्तिꣳ सर्व्वꣳ शान्तिꣳ

शान्तिरेवशान्तिꣳ सामाशान्तिं रेधि ॥१२ ॥

ॐ सर्व्वेषां वा एष व्वेदानाꣳ रसो यत्साम

सर्वेषामेवैनमेतद्वेदानाꣳरसेनाभिषिञ्चति ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अनेनश्रीरुद्राभिषेककर्मणाश्रीभवानी

शङ्कर महारुद्रः प्रीयतां न मम।

ॐ साम्ब सदाशिवार्पणमस्तु।

षडङ्गन्यासः-

मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहती छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे विनियोगः।

ॐ मनो॑ जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒ बृह॒स्पतिर्य्य॒ज्ञमि॒मंतनो॒ त्वरि॑ष्टं्ं य॒ज्ञꣳ समि॒मं द॑धातु। विश्वे॑ दे॒वास॑ऽइ॒ह मा॑दयन्ता॒मोऽ३ँ॥ प्रति॑ष्ठ॥

ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥

अबोद्ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिरोन्यासे विनियोगः।

ॐ अबो॑द्ध्य॒ग्निः स॒मिधा॒ जना॑नां॒प्रति॑ धे॒नुमि॑वा य॒तीमु॒षास॑म्। य॒ह्वा ऽइ॑व॒ प्रव॒या मु॒ज्जिहा॑ना॒ः प्रभा॒नव॑ः सिस्रते॒नाक॒मच्छ॑ ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिखान्यासे विनियोगः।

ॐ मूर्द्धानं दि॒वो ऽअ॑र॒तिम्पृ॑थि॒व्याव्वै॑श्वान॒रमृत॒ ऽआजा॒तम॒ग्निम्। क॒विꣳ स॒म्म्राज॒मति॑थिं॒ जना॑नामा॒सन्ना पा॑त्रं जनयन्तदे॒वाः॥

ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥

मर्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्माणि देवता विराट् छन्दः

कवचन्यासे विनियोगः

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥

ॐ कवचाय हुम् ॥ ४ ॥

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप् छन्दः नेत्रन्यासे विनियोगः।

ॐ व्विश्वतश्च्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखो व्विश्वतो बाहुरुत व्विश्वतस्स्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएकः॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥

मा नस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एको रुद्रो देवता जगती छन्दः

अस्त्रन्यासे विनियोगः।

ॐ मा न स्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

अथोत्तरपूजनम्

यजमानः देशकालौ संकीर्त्य कृतस्य श्री साम्बसदाशिवस्याभिषेक- कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल प्राप्यर्थं च श्री साम्ब- सदाशिवस्योत्तरपूजनमहं करिष्ये-इति संकल्प्य श्रीसाम्बसदाशिवस्य षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्-

रुद्रीपाठ का विविध फल

रुद्रीसंख्याफलं देवि शृणुष्व वदतो मम ।
एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते ॥ १ ॥
सङ्कल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यासाङ्गेषु सकृत् सकृत् ।
स्नात्वा पञ्चामृतेनैव ध्यानपूर्वं शिवं जपेत् ॥ २ ॥
बालग्रहोपशान्त्यर्थमेकावृत्तिमुदीरयेत् ।
उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३ ॥
ग्रहोपशान्त्यै कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने ।
महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ४ ॥

नवावृत्त्या भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत् ।
राजवश्ये विभूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ५ ॥
रुद्रैस्त्रिभिः कामसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ।
शत्रुश्च पञ्चभी रुद्रैस्तथा स्त्री वश्यतामियात् ॥ ६ ॥
सौख्यं स्यात्सप्तभी रुद्रैः शिवमाप्नोति मानवः ।
नवरुद्रैः पुत्रपौत्रधनधान्यसुतान्वितः ॥ ७ ॥
राजभीतिविनाशाय वैरस्योच्चाटनाय च ।
धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनाय ततः परम् ॥ ८ ॥
अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्ययशःश्रियै ।
राजवृद्धिप्रदेयाय महारुद्रैकसंख्यया ॥ ९ ॥
त्रिभिश्चैव महारुद्रैरसाध्यासाधनाय च ।

पञ्चभिश्च महारुद्रैः राज्यकामः प्रसाध्यते ॥ १० ॥
सप्तभिश्च महारुद्रैः सप्तलोकः प्रसाध्यते ।
नवभिश्च महारुद्रैः पुनर्जन्म न जायते ॥ ११ ॥
अतिरुद्रैकसंख्येन देवत्वं प्राप्नुयान्नरः ।
डाकिन्यादिभये प्राप्ते एकावृत्तिं जपेन्नरः ॥ १२ ॥
भूतप्रेतपिशाचानां भये च गुणवृत्तितः ।
ग्रहदोषदशायाञ्च पञ्चावृत्तिं न संशयः ॥ १३ ॥
ज्वरातिसारदोषादौ वातपित्तकफादिषु ।
सर्वरोगोपशान्त्यर्थं सप्तावृत्तिन्न संशयः ॥ १४ ॥
सर्वार्थसाधनायैव नवावृत्तिं पठेन्नरः ।
असाध्यरोगनाशाय मनोऽभीप्सितकर्मणे ॥ १५ ॥

अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्याय वै पुनः ।
सर्वशान्तिर्भवेत्तत्र रुद्रावृत्त्या न संशयः ॥ १६ ॥

भगवान् शिव ने पार्वती से रुद्री के पाठ का फल इस प्रकार कहा है-शिवपूजक सर्वप्रथम संकल्प कर अङ्गन्यास करे। पश्चात् शिव को पञ्चामृत से स्नान करावे और ध्यानपूर्वक जप करे। रुद्री के एक पाठ से बाल ग्रहों की शान्ति, तीन पाठ से उपसर्ग (उपद्रव) की शान्ति, पाँच पाठ से ग्रहों की शान्ति, सात पाठ से महाभय की शान्ति, नव पाठ से सर्वविध शान्ति और वाजपेय यज्ञ की फल-प्राप्ति, ग्यारह पाठ से राजा का वशीकरण और विविध विभूतियों की प्राप्ति होती है। तीन रुद्रों से कामना की सिद्धि और शत्रुओं का नाश, पाँच रुद्रों से शत्रु और स्त्री का वशीकरण, सात रुद्रों से सुखप्राप्ति, नव रुद्रों से पुत्र-पौत्र और धन-धान्य की समृद्धि होती है। एक महारुद्र से राजभय का नाश, शत्रु का उच्चाटन, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि, अल्पमृत्यु का विनाश, आरोग्य, यश और श्रीकी प्राप्ति तथा राजा से वृद्धि प्राप्त होती है। तीन महारुद्रों से असाध्य कार्य की सिद्धि, पाँच महारुद्रों से राज्यकामना की सिद्धि, सात महारुद्रों से सप्तलोक की सिद्धि, नव महारुद्रों से पुनर्जन्म की निवृत्ति होती है। एक अतिरुद्र से देवत्व की प्राप्ति, डाकिनी

आदि से भय की निवृत्ति, तीन अतिरुद्र से भूतादिकों से भय की निवृत्ति, पाँच अतिरुद्र से ग्रहदोष की शान्ति, सात अतिरुद्र से ज्वर, अतिसार, वात, पित्त, कफ आदि दोषों की शान्ति, नव अतिरुद्र से सर्वार्थसिद्धि, अल्पमृत्यु का विनाश और आरोग्य की प्राप्ति होती है। ग्यारह अतिरुद्र से समस्त प्रकार की शान्ति होती है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

रुद्राभिषेक के लिये विविध द्रव्य और उनका विविध फल

लिख्यते च मया द्रव्यमभिषेकात्मकं परम् ।
जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः ॥ १ ॥

दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च ।
मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा ॥ २ ॥
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याऽङ्गना ॥ ३ ॥
सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।
ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया ॥ ४ ॥
घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम् ।
तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः ॥ ५ ॥
प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम् ।
केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः ॥ ६ ॥

शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत् ।
श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च ॥ ७ ॥
सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह ।
मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात् ॥ ८ ॥
पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा ।
जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै ॥ ९ ॥
पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्च्चेच्छिवं तथा ।
महालिङ्गाभिषेकेण सुप्रीतः शङ्करो मुदा ॥ १० ॥
कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम् ।

श्री शंकरजी की आरती

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि॥
जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धङ्गी धारा॥
ॐ हर हर हर महादेव।
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजैं।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजै॥
दोभुज चारु चतुर्भुज, दसभुज अति सोहैं।
तीनों रूप निरखते, त्रिभुवन-जन मोहैं॥
अक्षमाला, बनमाला, रुण्डमालाधारी।

त्रिपुरारी कंसारी करमालाधारी ॥ ॐ हर... ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे ॥ ॐ हर... ॥
करमध्ये सुकमण्डलु चक्र शूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जगपालनकारी ॥ ॐ हर... ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर (ॐ) में शोभित, ये तीनों एका ॥ ॐ हर... ॥
त्रिगुण स्वामी की आरती, जो कोइ नर गावै।
भाव-भक्ति के कारण मनवांछित फल पावै ॥ ॐ हर... ॥

प्रकाशक : महर्षि वेद विज्ञान विश्व विद्यापीठम् - महर्षि नगर

मुद्रक : [illegible] ऑफ एनलाइटनमेन्ट पब्लिकेशन ग्रीन फील्ड्स कालोनी फरीदाबाद (हरियाणा), मार्च २०००